

क. विश्वास की नींव:

❖ सोला स्क्रिप्टुरा / सोलि डिओ ग्लोरिया।

- 16वीं सदी के सुधारकों ने सचमुच दुनिया को बदल दिया। लेकिन उन्होंने साफ कर दिया कि उनमें कुछ खास नहीं है। वे परमेश्वर द्वारा रूपांतरित लोग थे। इस कारण से, उन्होंने घोषणा की: "महिमा केवल परमेश्वर की है।"
- उनमें यह परिवर्तन कैसे हुआ? यह परमेश्वर के वचन का पढ़ना था जिसने यह चमत्कार किया। बाइबल ने उनके लिए क्या किया, और यह हमारे लिए क्या कर सकती है??
 - (1) यह विश्वास की नींव है
 - (2) उसके वादों पर विश्वास करके हम अपने विश्वास और साहस को नवीनीकृत करते हैं
 - (3) इसकी पत्तियाँ जीवन के वृक्ष के फल के समान हैं
 - (4) यह खुशी, आशा और प्रकाश फैलाती है
 - (5) यह हमें दिशा, निश्चितता, शक्ति और ज्ञान देती है
 - (6) शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से हमारे अस्तित्व में रहती है
- उस अंधकारमय समय में, बाइबल ने उनके जीवन को इस हद तक संतुष्ट कर दिया कि इसकी शिक्षाओं के प्रति वफादार बने रहने के लिए उन्होंने अपनी जान दे दी। और आज, क्या यह आपके जीवन को भी संतुष्ट करती है?

❖ बाइबल हर किसी के लिए उपलब्ध।

- टिंडेल (1494-1536) ने वाईकिलफ की बाइबल (लैटिन से अनुवादित) की त्रुटियों को ठीक करने के लिए मूल भाषाओं से सीधा अनुवाद किया। उसने यूनानी से अनुवादित नये नियम को प्रकाशित किया।
- माइल्स कवरडेल ने इब्रानी मूल से पुराने नियम के अनुवाद के साथ टिंडेल के काम को जारी रखा और पूरक बनाया। इस प्रकार, 1535 में अंग्रेजी में छापी गयी पहली बाइबल प्रकाशित हुई।
- यह संस्करण अंग्रेजी बोलने वालों के बीच सबसे व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले बाइबल अनुवाद के आधार के रूप में कार्य करता है: *किंग जेम्स संस्करण*, जो 1611 में प्रकाशित हुआ था।
- इरास्मस निवासी रॉटरडैम, जिसने उस समय यूनानी में नया नियम प्रकाशित किया (जो सुधारकों के सभी अनुवादों के लिए आधार के रूप में कार्य करता था)।
- जब बाइबल के अंग्रेजी संस्करण तैयार और प्रकाशित किए जा रहे थे, अन्य सुधारकों ने भी बाइबल का अपनी मूल भाषा में अनुवाद किया। इस तरह, बाइबल यूरोप के निवासियों और नई खोजी गई "नई दुनिया" द्वारा स्वयं पढ़ी जा सकती थी।
 - (1) मार्टिन लूथर: जर्मन में (1534)
 - (2) पियरे रॉबर्ट ओलिवटन: फ्रेंच में (1535)
 - (3) ब्रेस्ट बाइबल: पोलिश में (1563)
 - (4) कैसियोडोरो डी रीना: स्पैनिश में (1569)
 - (5) क्रालिस बाइबल: चेक में (1579)
 - (6) जोनास ब्रेटकुनास: लिथुआनियाई में (1579)
 - (7) ज्यूरिज डेलमेटिन: स्लोवेनियाई में (1584)
 - (8) जियोवन्नी डियोडाटी: इटालियन में (1607)
 - (9) जोआओ फरेरा डी अल्मेडा: पुर्तगाली में (1691)

❖ बाइबल व्याख्याकार।

- जब मार्टिन लूथर ने पहली बार लैटिन में बाइबल पढ़ी, तो उसका जीवन बदल गया।
- जब उसने इसके पन्ने पलटे, उसे एहसास हुआ कि एक उच्च शक्ति उसके दिमाग को रोशन कर रही है। सुसमाचार जीवंत और प्रभावी हो गया। अंधेरी परंपराएँ दूर हो गईं, और मसीह का अनुग्रह जाग उठा। किस शक्ति ने उसके मन को प्रकाशित किया?
- वह पवित्र आत्मा, बाइबल का एकमात्र अधिकृत व्याख्याता, था जिसने इसमें निहित सत्यों को प्रकट किया। और वही पवित्र आत्मा हमें दिया गया है ताकि हम भी इसे समझ सकें! (यूहन्ना 14:26; 16:13)।
- उस क्षण से यह स्पष्ट हो गया कि आधिकारिक कलीसिया द्वारा सिखाई गई परंपराओं और बाइबल में निहित सत्यों के बीच कोई सामंजस्य नहीं हो सकता है। विश्वास और आचरण का एकमात्र नियम बाइबल में निहित है, और पवित्र आत्मा द्वारा हमारे सामने प्रकट किया गया है।

ख. उद्धार का आधार:

❖ सोला ग्रैशिया / सोला फाइड / सोलस क्राइस्टस।

- इफिसियों 2:8 से तीन मूलभूत सत्य सामने आते हैं।
 - (1) हम केवल अनुग्रह ही से बचाये गये हैं
 - (2) अनुग्रह प्राप्त करने का साधन केवल विश्वास ही है
 - (3) यह परमेश्वर का दान है, उसके पुत्र का उपहार है: केवल मसीह का
- हमारे पापों के कारण, हम अनन्त मृत्यु से दंडित हैं (रोमियों 6:23ए)। हालाँकि, परमेश्वर ने हमारे ऋण को चुकाने और हमें अनन्त जीवन देने का एक तरीका प्रदान किया है (रोमियों 6:23बी)।
- जब मार्टिन लूथर को पता चला कि मसीह ही उसके उद्धार का एकमात्र स्रोत है, तो उसने उस सत्य का प्रचार करना शुरू कर दिया। हजारों लोग, जो दुश्मन (शैतान) के धोखे से जंजीरों में जकड़े हुए थे, मुक्त हुए और रूपांतरित हुए।
- यद्यपि उद्धार मुफ्त है, इसकी कीमत अनंत थी, और सभी के लिए पर्याप्त थी (यूहन्ना 3:16; रोमियों 8:32)।

❖ अनुग्रह में बढ़ते जाओ।

- मध्य युग के दौरान, लोग मसीही रस्म द्वारा, बैल की बलि, स्वयं को कष्ट देकर, तीर्थयात्राओं के माध्यम से अपना (और अपने पूर्वजों का) उद्धार कमाते थे...
- यह सब कष्टदायक था। यह कभी भी पर्याप्त नहीं था। जब तक उन्हें मसीह के अनुग्रह का पता नहीं चला। उस क्षण से उन्हें वास्तव में स्वतंत्र महसूस हुआ। उस स्वतंत्रता ने क्या उन्हें व्यवस्था का तिरस्कार करने या उसका पालन करने के लिए प्रेरित किया?
- मेथोडिस्ट आंदोलन के संस्थापकों में से एक, जॉन वेस्ली (1703-1791), लूथर द्वारा रोमियों के प्रस्तावना को पढ़कर प्रभावित हुए। उनके नए विश्वास ने उन्हें अनुग्रह में वृद्धि की तलाश करने के लिए प्रेरित किया।
- स्वयं यह जानने के बाद कि अनुग्रह ही से उद्धार होता है, उसने व्यवस्था का तिरस्कार नहीं किया, बल्कि इसका और अधिक ध्यान से अध्ययन किया, ताकि उसका जीवन उस जीवन के साथ अधिकाधिक सामंजस्य स्थापित कर सके जिसकी मसीह ने उससे अपेक्षा की थी।